रात्रिक्लास 16/6/68 ओमशान्ति –:अपन को आत्मा समझ भाई2 देखोः– त्रिमूर्ति का(ी) भी समझाना है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कौन कराते हैं किसको भी पता नहीं; क्योंकि कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। तो यह बातें सुनकर मुंझते हैं। तुम्हारे लिए नई बात नहीं। तुम कहेंगे 84 का चक्र पूरा हुआ फिर हम देवता बनते हैं दिन–प्रतिदिन सहज होता जाता है। समझते जाते हैं वृद्धि को पाते जाते हैं। 4/5 म्युजियम आदि खुल जावेंगे तो कहेंगे यह ब्रह्मा कुमारियाँ क्या हैं। सभी का ध्यान जावेगा। तुमको यह भी समझाना है जब तक ब्रह्मावंशी न बने तब तक देवता वंशी बन न सकें। ब्राह्मण कुल ही पुरुषोत्तम कुल कहा जाता है। बाप पढ़ाते हैं ना। यह तो बच्चों को जरूर बताना है। सभी आत्माओं का बाप वह है। खुद ही टीचर बन बच्चों को पढ़ाते हैं। फिर गुरु भी चाहिए जो सद्गति करे। वह भी है। हमारी सद्गति होती है। मनुष्य से देवता बनते हैं। तो यह नई बात नहीं है। हमारे कुल के जो नहीं हैं वह सभी घुस पड़ते हैं। कोई कुछ भी नहीं समझते। तब बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ कोई विरले ही जानते हैं। यह नई चीज़ है। बच्चे जानते हैं वृद्धि को पानी ही है। हमको पैगाम देना ह(ी) है। तुम हो पैगम्बर। घर–घर में बड़े2 आदमियों पास भी जाते हो ना; क्योंकि बड़ों की बात मनुष्यों को अच्छी लगती है। यह जो चक्र है त्रिमूर्ति के नीचे इस पर तुम बहुत ही अच्छी रीत समझा सकते हो। बाप आकर पवित्र फैमली प्लानिंग बना रहे हैं। इतने पवित्र बनेंगे जो सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी सतयुग त्रेता में आ सके। इतने ही बनने हैं। बाप कहते रहते है। बच्चे म्युजियम खोलो। प्रोजेक्टर से तो थोड़ा समझेंगे। प्रदर्शनी सबसे अच्छी है। जो देखेंगे। दूसरे को ले आवेंगे। ऐसा म्युजियम तो दुनिया में होता ही नहीं। यह ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। तो नया ज्ञान कहेंगे ना। देने वाला भी है नया। लेने वाले जो कल्प पहले वाले हैं वही आते रहेंगे। यह है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग। बहुत प्वाइन्ट्स हैं जो समझने के लिए कम से कम सात रोज जरूर चाहिए। तुम्हारी तो पंचायती ही नहीं थी। समझते थे खुदाई खिज(द)मतगार हैं। सभी मान देते थे। दुश्मन नहीं थे कोई के।

यह भी समझाया है अपन को आत्मा समझो तो बेहद के बाप वरसा जरूर याद आवेगा। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं। बाबा भी है शिक्षक भी है। ऐसे नहीं कि अन्तर्यामी है। अन्दर के बातों को जानते हैं। भक्ति को कहा जाता है घोर–अंधियारा। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। तो जरूर ज्ञान देने वाले होंगे। तुमको अभी नालेज मिलती है यह बनने लिए। सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी तुम्हारी बुद्धि में है। अगर कहते हैं मैं बाबा को याद करने में मुंझता हूँ, तो यह तुम्हारी तकदीर। जानवर को भी माँ–बाप याद पड़ते हैं। हद के बाप को याद करते हो, बेहद के बाप को याद क्यों नहीं कर सकते हो। यह तो वन्डर है ना। बाप बच्चों को आफिरन(आफरीन) तो देंगे ना। अपने लिए बच्चे राजधानी स्थापन कर रहे हैं गुप्त वेष में। तुम हो अन नोन वट वेरी वेल नोन। अभी तुमको कोई नहीं जानते हैं। फिर वन्देमात्रम् आदि कह कितना पूजा करते हैं। अम्बा पर कितना मेला लगता है। जीते जी मरने का पुरुषार्थ बहुत मीठा है। मर कर अमर पद पाते हो। तो मीठा है ना। तुम अमरलोक के मालिक थे, फिर बनते हो। बाप कहते हैं, बच्चों को देख2 मन हर्षित होता है। हमारे सामने सभी नूरे रत्न बैठे हैं। गायन भी है नजर से निहाल स्वामी किंदा सद्गुरु। गुरु नहीं। एक दो की नजर मिलती है और तुम सतोप्रधान बन जाते हो। और क्या चाहिए? बाप कहते हैं मैं बाप हूँ। स्वदर्शनचक्रधारी भी हूँ। मैं स्व जो परमात्मा हूँ मुझमें सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान है। तो मैं स्वदर्शनचक्रधारी बना ना। कौन बना? परम आत्मा। तुम आत्माएँ पतित हो। अभी तुमको आप समान बनाना है। स्वदर्शचक्रधारी है आत्मा। तुम भी स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। यह ज्ञान की संस्कार ले जाते हैं। फिर आते हो पार्ट बजाने तो ज्ञान के संस्कार ले जाते हो। ड्रामा पूरा हो जाता। फिर सुख की प्रारब्ध शुरु हो जाती है।

अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।